[Shri S. Kandappan]

to occur in a developing economy. But this kind of let-loose inflation, after the five year plans have come to stay in our country, is something unheard of in the history of developing nations in the world, barring one or two countries.

The crux of the matter is, our economy is in a fix and the real malady that damages the economic health of the country—the villain of the piece—is the price rise. We all know that the price index is spiralling high and there is no check on it. Actually, after independence, all these 20 years, Government at no time were able to check prices. They were pleading helplessness, being pathetic spectators to the currents and cross-currents of our economy and they were not able to do practically anything about it. On the top of this chaotic situation, this loose and irresponsible talk of freeze in wages is rather amazing.

Mr. Speaker: It is now 5.30. We have to take up the half-hour discussion. I hope the hon. Minister would have no objection if this discussion is postponed to next Friday, because many hon. Members want to participate in this.

The Minister of State in the Ministry of Finance (Shri K. C. Pant): Sir, I am entirely in your hands.

Mr. Speaker: Therefore, we will continue this discusison next time and Shri Kandappan will also continue his speech next time.

Shri Indrajit Gupta (Alipore): Sir, the time allotted was two hours. I suggest that it may be extended by an hour.

Mr. Speaker: We will extend it by one hour more. I hope the Minister will have no objection.

Shri K. C. Pant: I have no objection.

17.32 hrs.

*SANGEET NATAK AKADEMI AND SAHITYA AKADEMI

Mr. Speaker: Dr. Ram Manohar Lohia may raise the half-an-hour discussion.

श्री कंवर लाल गुप्त (दिल्ली सदर) : अध्यक्ष महोदय, पायंट आफ आर्डर । मैं निवदन करना चाहता हूं कि आज सुबह गृह मंत्री जी ने यह वादा किया था कि वह मध्य प्रदेश के बारे में स्टटमेंट देंगे । आप उन से स्टेटमेंट देने के लिए कहें । मध्य प्रदेश असेम्बली के बारे में लेटेस्ट खबर यह है कि उस को आज तीन बज बगैर किसी कारण के एडजार्न कर दिया गया । ग्रान्ट्स पर बहस हो कर वहां पर जो शक्ति परीक्षण होने वाला था, वह नहीं हुआ ।

Mr. Speaker: I have called Dr. Lohia to raise the discussion.

श्री कंवर लाल गुप्त : आप ने भी सुना होगा कि मध्य प्रदेश असेम्बली को बिना किसी कारण एजार्न कर दिया गया है ।

Mr. Speaker: I am not aware of it.

Shri Knwar Lal Gupta: You can ask the Home Minister to make a statement.

Mr. Speaker: No please.

श्री कंवर लाल गुप्त : अध्यक्ष महोदय, जहां तक मध्य प्रदेश एसेम्बली का सम्बन्ध है, टाइम फैक्टर का बहुत महत्व है । वहां की सरकार और टाइम लेना चाहती है ।

Mr. Speaker: I cannot help it. I cannot ask any Minister, any minute, to make a statement.

*Half-an-Hour Discussion.

श्री कंवर लाल गुप्त : आज गृह मंत्री ने यह वादा किया था कि वह एन्क्वायरी करने के बाद स्टेटमेंट देंगें । वहां पर कांस्टीट्यूशन पर फ्राड हो रहा है ।

Mr. Speaker: Will you kindly resume your seat. We are taking up the half-hour discussion now—Dr. Lohia.

डा० राम मनोहर लोहिया (कन्नौज) : अध्यक्ष महोदय, आज जिस विषय की चर्चा इस माननीय लोक सभा को करनी है, वह परदेश में तो आनन्द और आहलाद का विषय होता है, किन्तु अपने देश में विषाद का विषय । वैसे तो यहां हर प्रकार की एकेडमी या कौंसिल है, लेकिन मैं इन दो के बारे में विशेष चर्चा नहीं करूंगा : एक तो वह, जो विदेशों से रिश्ता रखती है और दूसरी, ललित कला अकादमी । मैं केवल साहित्य अकादमी और संगीत नाटक अकादमी के बारे में कहना चाहता हूं ।

इस सम्बन्ध में मैं केवल एक विदेशी एकेडमी की चर्चा किये देता हूं और वह है स्वैंसका अकादेमियन, स्टाकहोम । हर्ष होता है, मजा आता है उस एकेडेमी की बात पढ़ कर । जब उस का सालाना जलसा होता है, तो सब से पहले सब आमन्त्रित लोग आ कर बैठ जाते हैं, जिन में प्रधान मंत्री तक होते हैं । फिर राजा का परिवार आ कर दो नम्बर जगह पर—अध्यक्ष महोदय, दो नम्बर जगह पर—बैठ जाता है । आखिर में एकेडेमी के अठारह सदस्य —वे अठारह ही रहते हैं, अगर कोई मर गया, तो चाहे कम हों, लेकिन अठारह से ज्यादा नहीं होते हैं—आते हैं और जब वे आते हैं, तो सब लोग, चाहे राजा हो, रानी हो और चाहे प्रधान मंत्री हो, उनका अभिवादन करने के लिए उठते हैं, क्योंकि वह दिन एकेडेमी का दिन होता है । यह तो स्वीडन की एकेडेमी के विषय में है, जो, या जिस की कमेटी, संसार का सब से बड़ा पुरस्कार यानी नोबेल पुरस्कार, शान्ति वाले को छोड़ कर, दिया करती है । स्वैंस्का अकादेमियन, स्टाकहोम की चर्चा पढ़ कर, सुन कर और देख कर मजा आता है ।

इसी तरह मजा आता है फ्रांस की एकेडेमी की बातें पढ़ कर उसकी किताबें देख कर ही तबियत प्रसन्न हो जाती है । लाजवाब चीज है । मैं मानता हूं कि हमारे पास उतना धन नहीं है, लेकिन केवल यही कारण नहीं है । वहां के लोग ही दूसरे हैं । उस एकेडेमी में चालीस सदस्य होते हैं चालीस से ज्यादा नहीं । उसमें कई बार बड़े बड़े लोग नहीं पहुंच पाते हैं । ग़लती हो जाती है । उस में हमेशा सब अच्छे ही आदमी रहते हैं, यह भी बात नहीं है । लेकिन अगर उसमें रूसो नहीं पहुंच पाता है, तो वाल्तेयर पहुच जाता है; अगर मोलिये नहीं पहुंचता है, तो अनातोल फ्रांस पहुच जाता है । यह एक परदेश की एकेडेमी की बात है ।

और अपने देश की एकेडेमी ? मैं ज्यादा नाम नहीं बताऊंगा, क्योंकि उससे आपस में थोड़ा सा मन-मुटाव हो जाया करता है । माननीय शिक्षा मन्त्री बुरा नहीं मानेंगे, इस लिए मैं ख़ाली वे नाम पढ़े देता हूं, जो भारत सरकार की तरफ़ से साहित्य अकादेमी और संगीत नाटक अकादेमी में रखे गए हैं । भारत सरकार की ओर से साहित्य अकादेमी में ये पांच नाम भेजे गए : डा० त्रिगुण सेन, श्री एम० सी० चागला, डा० सी० डी० देशमुख, श्री के० के० शाह और डा० बी० वी० केसकर ।

Shri Kanwar Lal Gupta: Where is the Prime Minister?

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं ज्यादा तो नहीं बोल पाऊंगा, क्योंकि औरतों के लिए बोलते वक्त मेरी जुबान थोड़ी सी रुकी रहती है ।

संगीत नाटक अकादेमी में ये पांच नाम हैं : श्री के० पी० एस० मेनन, डा० वी० के० नारायण मेनन, श्री ए० के० चन्दा, डा० वी० एस० झा, और श्री बलराज साहनी । इनमें से

[डा० राम मनोहर लोहिया]

एक के बारे में तो कम से कम यह कहा जा सकता है कि अपने क्षेत्र में, चाहे अच्छा या बुरा, उसका कुछ स्थान है। लेकिन बाकी जो नौ लोग हैं ?—अध्यक्ष महोदय, आपके नाखुन के मरे हुए हिस्से में जो साहित्य और संगीत है, उससे ज्यादा उन लोगों में नहीं है।

लेकिन क्या किया जाये ? हर काम सरकारी, हर काम नौकरशाही का। नौकरशाही का और सरकार का इतना ज़बर्दस्त आधिपत्य हमारे जीवन के हर एक क्षेत्र पर हो गया है कि संस्कृति पर, संगीत पर, नाटक पर पाला पड़ गया है। ऐसा लगता है कि जैसे मौत की अंगुलियां न सिर्फ़ हमारी फ़सल को छूती हैं, बल्कि हमारी किताबों, साहित्य, नाटक और सभी चीज़ों को छू दिया करती है।

मैं अपनी बात तो आप से क्या कहूं ? सरकार ने एक कमेटी बिठाई थी : रीव्यूइंग कमेटी फ़ार दि थ्री अकादेमीज़—तीन अकादेमियों के लिए पुनर्विलोकन समिति। उसने 1964 में अपनी रपट दी। उस कमेटी में तीन चार लोग थे। मैं समझता हूं कि अच्छे लोग थे। उनमें से एक का नाम मैं बताऊंगा। एक औरत, जिसके साथ अंग्रेजों से लड़ते वक्त हमारे जैसे लोगों को आनन्द भी होता था, अभिमान भी होता था, जो उन कम लोगों में है, जिन्हें जिन्दगी के थपेड़ों ने लालित्य दिया है—कमलादेवी। उस कमेटी की तरफ़ से जो रपट निकली, मैं उसकी ख़ाली कुछ बातें आप को बता दूं।

एक तो यह कि जितनी अकादेमियां बनाई गईं, उन सब में सरकारी लोग हैं। हो सकता है कि माननीय मन्त्री महोदय जवाब देने के लिए कह दें कि विश्वविद्यालय के भी हैं और एक-आध प्रदेश अकादेमियों के भी हैं। लेकिन चाहे वे सरकार के हों, प्रान्तीय सरकार के हों और चाहे विश्वविद्यालयों के हों, उन अकादेमियों में अपने घर के बीस, तीस, चालीस आदमी बिठा दिये जाते हैं। इस रपट के सातवें और आठवें सफ़हे पर यह बिल्कुल साफ़ राय दी गई है कि हर साल इन अकादेमियों के पांच से दस सखा बना दिये जायें—जिन्हें यूरोप और अंग्रेज़ों के देश में फ़ेलो कहते हैं और मैं समझता हूं कि उसके लिए अपने यहां सबसे बढ़िया शब्द है "सखा"—और पांच दस बरस के अन्दर अन्दर ऐसे सखा बना लिये जायें, ताकि फिर इन सरकारी मन्त्रियों और नौकरशाहों की कोई ज़रूरत न रहे और इन अकादेमियों का काम इन सखाओं के हाथों स्वतंत्रता पूर्वक चल सकें।

इतना ही नहीं, वह कमेटी और आगे गई है। मैं उसकी रपट में से एक वाक्य अंग्रेज़ी में पढ़ देना चाहता हूं :

> "Moreover, the presence of ministers and other high dignitaries has the effect of *inhibiting* free and full discussion and, therefore, limits the fullness and value of the advice which these organisations can tender to the Government."

जब मिनिस्टर्ज़, मन्त्रियों, के बारे में यह राय है, तो फिर राष्ट्रपति और प्रधान मन्त्री के वहां पहुच जाने से तो सारा ही मामला ख़त्म हो जाता है। और उसको अगर आप देखें तो शुरू से ही जब से साहित्य अकादमी बनी है, एक आदमी के बारे में बात नहीं कहूंगा। वह मर चुके हैं। किसी हद तक उनको वह आप लेखक कह भी सकते हो शायद, लेकिन वर्तमान जो सभापति हैं, पहले राष्ट्रपति थे, अब तो राष्ट्रपति नहीं हैं। पहले भी मेरी राय उनके बारे में यही थी। मैं तो कह दिया करता था, आज तो स्वच्छदतापूर्वक लोक सभा में भी कह सकता हूं, अगर अकादमी आप को अलग से दर्शन की बनाना हो और उसमें उन को सदस्य बनायें तो उसके बारे में हां या ना राय कम से कम बना सकते हैं, कम से कम सोच सकता हूं लेकिन लेखक साहित्य अकादमी के सभापति डा० राधाकृष्णन् ? और उसी तरीक़े से संगीत नाटक और नृत्य अकादमी के सभापति प्रधान मन्त्री। संगीत, नाटक और नृत्य की सभापति

प्रधान मन्त्री ? मैं आप को अध्यक्ष महोदय, रपट में कई चीजें आई हैं, पढ़ कर नहीं सुनाऊंगा। एक जगह रपट में लिखा हुआ है, जरा कम से कम रपट तैयार करते समय इसे तैयार करने वाले लोग देख लिया करें, शायद विदेश में आप की कोई कापी, प्रति चली जाती होगी। एक आदमी, अब आदमी में मर्द और औरत दोनों होते हैं। सभापति बनाते वक्त जो उसके गुण के लिए कहा है अब मैं उसे अंग्रेजी में कहे देता हूं, अंग्रेजी बोलता होता तो बड़ा मजाक इस पर चल सकता था। वह कहते हैं वह आदमी सभापति बन कर :

"The prospect of aiding performing artists excites me and stimulates me."

उसने यह क्यों नहीं जोड़ दिया and fulfils me. वह जोड़ देते तो पूरा हो जाता।

अध्यक्ष महोदय : माननीय सदस्य का समय समाप्त हो रहा है।

डा० राम मनोहर लोहिया : मुझे अपनी बात पूरी कह लेने दीजिये, अपनी बात पूरी कर लेने दीजिए। साहित्य और नाटक अकादमी पर मामला इतनी जल्दी ख़त्म न करिये। मैं बहुत जल्दी जल्दी अपनी बात कहूंगा। ख्याति के माने होते हैं, आज मुश्किल से यह मौका मिला है जब हम लोग जरा बातें करें बाल सरस्वती की, उस बाल सरस्वती की जो इस उम्र में भी जरा भरी हो जाने के बाद भी नाचती है और चलती है तब ऐसा लगता है कि मानों हवा पर नाच रही हो और जवां परी चल रही हो। बात करो उसे बिसमिल्ला खां की जिस की शहनाई सुन करके, और याद रखना शहनाई ही नादस्वरम् का एक रूप है कुछ अलग से नहीं है। जिस की शहनाई सुन करके कभी कभी लगता है कि दिल का कोई तार कहीं बहुत ज्यादा तो नहीं खिंचता चला जा रहा है और फिर यकायक जो उस में आनन्द और आल्हाद आता है, उन्हें रखते या फिर शम्भु महाराज को अकादमी में रखते। उन को सखा बनाते। आखिर ख्याति के बारे में अध्यक्ष महोदय, यह तो बिलकुल साफ बात है किसी भी देश में किसी भी समय 700–800, हजार आदमी ख्याति के होंगे, पदेनख्याति के। अब जैसे 400 मंत्री हैं, चाहे जितने नादान हों लेकिन वह विख्यात होंगे। 50 उप कुलपति हैं, चाहे जितने नादान होंगे लेकिन विख्यात होंगे। उसी तरीके से और भी कालिज के जो प्रिंसिपल्स वगैरह हैं, चाहे जितने नादान हों, विख्यात होंगे तो ख्याति ही होने के कारण रख दो तो यह पूरे सार्वजनिक जीवन की ख्याति ऐतिहासिक होती है, समकालीन होती है, कुछ तो खाली पदेन ही होती है, बुरा रहता कि थे, ह आये गये, एक सैकेंड के लिए उन को नहीं पूछा, इतना भी नहीं पूछा जितना वह चिउंटी के पर लगने पर पूछा जाता है। लेकिन जो ऐतिहासिक ख्याति है वह तो बिलकुल ही असम्भव सी रहती है बहुत अर्से तक। लेकिन कम से कम समकालीन ख्याति अपने क्षेत्र की तो हो। मुझे तो ऐसा लगता है . . .

श्रीमती लक्ष्मीकान्तम्मा (खम्मम) : आप रविशंकर को भूल गये।

श्री शिव नारायण (बस्ती) : तानसेन को क्यों नहीं शामिल करते ?

डा० राम मनोहर लोहिया : मैं जान बूझ कर औरतों का नाम ले रहा था बाकी आप कहिये तो रविशंकर का भी नाम ले लू, रविशंकर क साथ साथ उदयशंकर का भी नाम ले लूं, उदय शंकर तो मेरा दोस्त है लेकिन अब मेहरबानी करके मुझ को अपनी बात पूरी कर लेने दीजिये। मेरा वश चलता तो जैसे यहां पर यह बनाया गये हैं। उस में श्रीमती लक्ष्मीकान्तम्मा की जगह थी मैं बताना चाहता हूं कि जिस तरीके से बिड़ला और टाटा की कम्पनियों का पता लगाने के लिए हजारे आयोग बनाया गया है, 200 कम्पनियां या

[डा० राम मनोहर लोहिया]

150 कम्पनियां इन की मातहती में हैं, मैं एक सुझाव देना चाहता हूं कि ग्राप को एक हजारे ग्रायोग बनाना चाहिए सार्वजनिक जीवन ग्रौर सांस्कृतिक जीवन में। उसी तरीके से एक, एक दो, दो व्यक्तियों ने 50–100–200 जगहों पर छापे मार रक्खे हैं। हो सकता है मुझे यह लोग कहें यह बात तो विदेश में है। ब्रिटिश कौंसिल है उस के ग्रन्दर रकार के मनोनीत लोग रहते हैं तो मैं ले से साफ़ किये देता हूं कि ब्रिटिश कौंसिल ख़ाली ग्रंग्रेज़ों के प्रदेशों से सम्बन्ध रखने वाली संस्था है। ग्रंग्रेज़ों के यहां जो कला की संस्था है ग्रथवा साहित्य की संस्था है उसे में सरकार के मनोनीत सदस्य नहीं हुग्रा करते हैं। यह ब्रिटिश कौंसिल में होता है। उस में ग्रगर चुनना हो तो जापान की जो कौंसिल है वह बढ़िया है मजेदार है। साइंस कौंसिल ग्रौफ़ जापान जिसके 210 सदस्य होते हैं सब के सब चुने हुए होते हैं। उन के चुनने का ग्रलग ग्रलग प्रकार है। ग्रगर हम ग्रपने देश के जीवन को सुधारना चाहते हैं तो इन इत्यादि के मामले में फिर से सोचना पड़ेगा। ख़ाली इसलिए कि सेरकार धन दे देती है इसलिए उस का कब्ज़ा हो जाना चाहिए, इस विचार को बिलकुल बदल देना चाहिए।

ग्राप को याद होगा, मैं एक ही किस्सा सुना कर ख़त्म कर देता हूं। बीटोवेन का किस्सा। ग्राज का नहीं ग्राज से 150 वर्ष पहले का बीटोवेन, एक गाना बनाने वाला सर्वश्रेष्ठ शायद ग्रब तक है, वैसा देश ग्रपने को बनाना है। वह खुद भी गाने की कला का संगीत का नेतृत्व करता था। एक बार वह संगीत का नेतृत्व कर रहे थे तो राजा कुछ ग्रपने पड़ौस में बैठे हुए ग्रादमी के कान में फुसफुसाया। बीटोवेन ने संगीत बजाना बंद कर दिया। ख़ाली एक ही बात कही। जब राजा बोलता है तब सब चुप हो जाते हैं। नतीजा हुग्रा कि राजा को जो शर्म लगी है सारी जिंदगी, उस को सांस्कृतिक जीवन समझ में ग्रा गया कि जब बीटोवेन जैसा संगीतज्ञ ग्रपने संगीत को बजाये उस वक्त चुप रहना चाहिए। कला संगीत....

Mr. Speaker: Now only ten minutes are left for all the members. He may complete now.

डा० राम मनोहर लोहिया : मेरे कहने का मतलब यह है कि ग्रध्यक्ष महोदय, ग्राप स्वयं इस में दिलचस्पी लें ग्रौर यह जो सारा गड्ढा बन गया है मौत का इस को बंद करें। कम से कम इतना तो करें कि जो शिक्षा मंत्रालय ने जांच करवाई थी, 1964 में रपट निकाली जिसके ग्रनुसार 1967 तक ग्रधिकांश नियंत्रण इन ग्रकादमियों के ऊपर हो जाना चाहिए सही ग्रौर सच्चे लोगों का उसे करवा दीजिये वरना मैं धमकी तो देना नहीं चाहता, मेरी जगह दूसरा होता इन को पहले ख़त्म करो वह मैं नहीं नहीं कहना चाहता, या पैसा देना बंद करो। बाक़ी इतना जरूर कहना चाहता हूं कि इस माननीय सदन् को इस में दिलचस्पी लेनी चाहिए ग्रौर कोई न कोई उपाय ग्रवश्य करना चाहिऐ।

The Minister of Education (Dr. Triguna Sen): Let me say a few words.

Mr. Speaker: He has to say. Without his saying, we will not go. He will say after the questions have been put. Mr. Kundu.

Shri S. Kundu (Balasore): After Dr. Lohia has made a very valuable contribution to this topic, I would like to know this from the hon. Minister. In a changing society, art, culture and music need direction and need to be defined from time to time. We want that it should be true, purposive, sincere and it must reflect the urge of the people. It should not be the preserve of a few, nor should it

be only a show-piece in the drawing room as it is in India. In this context, when India has moved 20 years, may I know what positive steps the hon. Minister is going to take and what break-through the hon. Minister is going to bring about, to give this new direction to this realm of art, music and literature?

श्री तुलसीदास जाधव (बरामती) : मैं इस दृष्टि से प्रश्न पूछना चाहता हूं कि जैसे पहले लोकल लैंग्वेज में महाराष्ट्र में बाल गंधर्व का नाटक चलता था और गांवों में हर जगह उन को लोग बड़े आदर से और प्रेम से देखते थे क्योंकि उस से उन को एजुकेशन मिलती थी, उसी तरह से क्या आज कल हर प्रान्त में आल इंडिया बेसिस पर कोई नाटक आदि होते हैं? मैं जानना चाहता हूं कि इस को उत्तेजन देने के लिये अभी तक क्या क्या किया गया है और कितना खर्च किया गया है। मिनिस्टर साहब हम को यह बतलायें।

Shri M. L. Sondhi: (New Delhi) The situation regarding the Akadamis which has been outlined by Dr. Ram Manohar Lohia represents, in fact, one of the gravest situations which this country faces in respect of art and culture. Will the hon. Minister kindly assure the House concretely that at least when we shall shortly be approaching the centenary of Ananda Coomaraswami, a person who dedicated his life to instilling in the dry bones of all these experts in this country the real hope and energising power of the ancient mind of India in a modern perspective, he will take profit from the discussion here and see that the path to remedying the present malaise will take advantage of Ananda Coomaraswami's pioneering work?

श्री रबि राय (पुरी) : जिस रपट का यहां पर जिक्र किया है उसमें एक जगह पर यह कहा गया है कि :

"While this might have been necessary in the initial stages in getting the organisation launched, a stage has been reached when the president of an Akadami or ICCR should be selected from persons eminent in the relevant field and not merely eminent in public life.

मैं मन्त्री महोदय से पूछना चाहता हूं कि यह जो जांच रपट निकली है उसे कब तक कार्यान्वित किया जायेगा। मैं इस के बारे में स्पष्ट आश्वासन चाहता हूं।

श्री रणधीर सिंह (रोहतक) : मैं महसूस करता हूं कि प्राइम मिनिस्टर और प्रैजिडैंट का इन अकाडमियों का सभापति होना बहुत अच्छा है जिसमें कि अकाडमी को रिकग्निशन मिले। (व्यवधान)

दूसरी बात डा० लोहिया ने बड़े पते की कही है और मैं उनसे इत्तफाक करता हूं और मैं मिनिस्टर साहब से पूछना चाहूंगा कि स्वेडिश और फ्रेंच अकाडेमी का जो स्टैन्डर्ड है उसको पाने के लिये सरकार के रास्ते में जो खामियां हैं उनको वह कब तक दूर करेगी ताकि डा० लोहिया का जो नेक सुझाव है उस स्टैन्डर्ड तक हमारी अकादमी पहुंच सकें?

Mr. Speaker: Now, the hon. Minister.

Shri Kanwar Lal Gupta: I had also sent my name.

Mr. Speaker: I have not received it till now. If I had received I would have called him. Now, I am sorry.

Dr. Triguna Sen: My colleague Shri Bhagwat Jha Azad who deals with the Akadamis will reply to the questions that have been raised. I would only like to say with your permission one thing. When I got the notice regarding the half-an-hour discussion under the name of Dr. Ram Manohar Lohia whom I knew to be

[Dr. Triguna Sen]

very educated, cultured an an artist and literateur and what not, I thought that after the half-an-hour's discussion I would be benefited by the wise counsels of hon. Members, and we could try to fill up the gaps that were there in the working of the Akadamis, but I must confess after having heard Dr. Ram Manohar Lohia that he gave very little suggestions regarding the improvement of the Akadamis. He went into personalities. With the little Hindi that I could understand, I think he had mentioned only the names of some persons and made some aspersions . . .

Shrimati Lakshmikanthamma: Success depends on the persons also.

Shri Ranga (Srikakulam): He ought not to be in the Akadami.

Dr. Triguna Sen: In the Sahitya Akadami, as per the constitution, there are 73 members elected by the different States, universities and professional institutions. The hon. Member did not mention single name out of the names of these 73 members but concentrated on the five who were nominated by Government.

Similarly in regard to the Natak Akadami, both the members very nicely avoided the names or qualifications of 47 members who represent the States and different professional bodies but talked only of those five members nominated by Government.

डा० राम मनोहर लोहिया : रप्व्य ।

Dr. Triguna Sen: I thought they would give us constructive suggestions but I was really disillusioned by the questions they asked and the matter they raised.

My hon. colleague will deal with the questions asked.

डा० राम मनोहर लोहिया : कितने नामजद हैं सरकारी मन्त्री जी यह बतला दें ।

शिक्षा मन्त्रालय में राज्य-मन्त्री (श्री भागवत झा आजाद) : मैं अभी बतला दूंगा कि कितने नामजद हैं और कितने गैर-नामजद हैं । आप को मालूम है कि जब आपके पास से नोटिस गई उसमें यह दिया गया था कि हम इन प्रश्नों पर विश्लेषण चाहते हैं कि क्या कोई सिद्धान्त या नियम है जिसके आधार पर सदस्यों को मनोनयन होता है । दूसरी बात डाक्टर साहब ने कही कि नौकरशाहों, मन्त्रियों और महाराजाओं का बड़ा जोर है । तीसरी बात उन्होंने कही थी कि इसके कारण सांस्कृतिक घुटन आ जायेगी या आ गई है । अभी उन्होंने एक ही बात पर जोर दिया अर्थात् सरकार द्वारा नामजद पांच व्यक्तियों के नाम पर ।

अगर उन पांच व्यक्तियों को भी लिया जाये जिन का उन्होंने उल्लेख किया तो मैं समझता हूं कि डाक्टर साहब को मालूम होगा कि दूसरे जो डाक्टर वी० के० एन० मेनन हैं उन्होंने स्वयम् अपनी तरफ से प्रतिष्ठा प्राप्त की और वह कर्नाटक के जाने माने विद्वान् हैं, न कि उनकी प्रतिष्ठा इसलिये है कि वह आल इंडिया रेडियो के डाइरेक्टर जनरल हैं । वे स्वयम् संगीत के विशेषज्ञ हैं इस लिये उन्हें नामजद किया गया है । बलराज साहनी नाट्य क्षेत्र के प्रतिष्ठित कलाकार हैं । वी० एस० झा कोई सरकारी आदमी नहीं वे पहले कभी शिक्षा आयोग के सदस्य रह चुके हैं और उसके पूर्व बनारस विश्वविद्यालय के वाइस चांसलर रह चुके हैं । इस तरह से जिन नामों को उन्होंने बड़ा ही हू-हू फू-फू कर दिया उनकी प्रतिष्ठा डाक्टर साहब के लिये भले ही न हो लेकिन देश की दृष्टि से वह जाने माने और लब्ध-प्रतिष्ठ विद्वान् हैं । यदि उन विद्वानों का मनोनयन सरकार ने किया है तो अवश्य ही कोई गलती नहीं की है । लेकिन मान भी लिया जाये कि जो पांच आदमी नामजद किये गये वह बड़े ही गलत हैं तो भी साहित्य अकादमी में जैसा माननीय शिक्षा मन्त्री ने कहा 73 सदस्य हैं उनमें से सिर्फ पांच यह हैं । उनके अलावा

हम 15 प्रतिनिधि राज्य सरकारों के लेते है, 20 विश्वविद्यालयों से लेते हैं। इसके अलावा 8 लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान् हैं। संगीत नाट्य अकादमी में भी हमने उनको लिया है जो कर्नाटक म्युजिक के ज्ञाता हैं, जो हिन्दुस्तानी म्युजिक के ज्ञाता हैं, जो नाटक के ज्ञाता हैं। सिवाए इन पांच आदमियों के जिन को हमने लिया है उनकी अपने कला के क्षेत्र में अपनी देन है। उनकी देन के बावजुद अगर डा० लोहिया उन को न माने तो क्या कहा जा सकता है। बहरहाल जिन लोगों का चयन किया गया है वह सभी इस देश के नामी गिरामी विद्वान् हैं अपनी कला के क्षेत्र में। डाक्टर साहब ने बहुत से नाम लिये। उनमें से दो चार का उल्लेख करके मैं बतलाना चाहता हूं कि चाहे संगीत के क्षेत्र में हों, चाहे नाटक के क्षेत्र में हों, चाहे और किसी क्षेत्र में हों, सबों को साहित्य के क्षेत्र में, नाटक के क्षेत्र में, संगीत के क्षेत्र में, हमने स्थान दिया है। जैसे मृणालिनी साराभाई है, शम्भु महाराज हैं इस तरह के जितने भी इस देश को लब्ध प्रतिष्ठ लोग हैं, हर स्कूल के प्रतिनिधियों को इस में लिया गया है और उन के सरकार ने नामजद नहीं किया है। हम ने सिर्फ पांच व्यक्तियों को नामजद किया है। एक सभापति और इस के अलावा एक फाइनेन्शल एडवाईजर हैं उन सब ने मिल कर इन सबों को नामजद किया है। हम ने सिवा इन पांच के एक नाम नहीं लिया। हां संगीत नाटक अकादमी के 43 और कहां साहित्य नाटक अकादमी में 73। अगर इन 73 और 43 में हम लोगों ने सिर्फ पांच व्यक्तियों को नामजद किया है तो इस में आपत्ति नहीं होनी चाहिये।

यह बात दूसरी है कि डाक्टर साहब यह कहें, फ्रेंच अकेडमीं के नाम पर या स्वेडन की अकेडमी के नाम पर, कि उन का चरित्र कितना उभरा है देश में। हो सकता है कि आजाद हिन्दुस्तान के बीस वर्षों में हम ने साहित्य के क्षेत्र में, कला के क्षेत्र में, संगीत के क्षेत्र में, और नाटक के क्षेत्र में इतनी ख्याति प्राप्त न की हो। फिर भी हमारे पास ख्याति जिन से प्राप्त होती है वो चीजें हैं। अगर डाक्टर साहब देखें तो अभी संगीत नाटक अकादमी ने–

18 hrs.

डा० राम मनोहर लोहिया : अगर मुझे जवाब का मौका दें तब तो बात ठीक है और अगर न दें तो––

अध्यक्ष महोदय : किस तरह से जवाब का मौका दिया जा सकता है। हाफ एन आवर में यह नहीं हो सकता है।

डा० राम मनोहर लोहिया : तब फिर जरूरी है कि मैं बीच में टोकूं। ये 73 कह रहे हैं। मैं पहले कह चुका हूं कि इस में राज्यों के नुमाइद हैं, वे भी सरकारी हो जाते हैं। वे पंद्रह हैं। उस में साहित्य अकादमी के एक एक भाषा के नुमाइंदे हैं। वे भी उनके नामजद हो जाते हैं। विश्वविद्यालयों के हैं व भी नामजद हो जाते हैं। खाली आठ बाकी रह जाते हैं जिन को आप कह सकते हैं कि नामजद नहीं हैं इन 73 में से? अगर मैं अपने नौकरों को, आप या और किसी के जरिये से नामजद कर दूं या करवा दूं या संस्था बना दूं और उसको स्वायत कह दूं तो वह संस्था स्वायत्त नहीं हो जाया करती है। जैसे जापान की अकादमी है, फ्रेंच अकादमी है वे बिल्कुल स्वतंत्र हैं। उन में नामजद मेम्बर नहीं होते हैं। इन 73 में भी आठ को छोड़ कर खुद चुनाव करते हैं। स्वायत्त संस्था कोई तब बनती है जब उस में निर्वाचन का सिद्धांत आ जाता है––

श्री भागवत झा आजाद : दुख यह है कि जब बात जमने लगती है तो लोगों को बड़ा दुख होता है। संसदीय प्रणाली में माननीय सदस्यों को समालोचना का पूरा अधिकार है लेकिन संसदीय प्रणाली में मुझको जवाब देने का भी उसी तरह से अधिकार है। डा० साहब को मालूम होना चाहिये कि आध घंटे की जो बहस होती है उसमें जवाब देने का अधिकार जो उसको शुरू करता है उसको नहीं हुआ करता है। डा० साहब

[श्री भागवत झा आजाद]

पूरे बीस मिनट बोले हैं । मैं उनसे केवल दस मिनट मांगता हूं और इन दस मिनटों में मैं उनको सारी बात बता दूंगा । मैं उनको तथ्य दे सकता हूं समझने के लिए, मैं उनको मजबूर नहीं कर सकता हूं कि वह उनको समझें । डाक्टर साहब समझते हैं कि विश्व-विद्यालय के जितने प्रतिनिधि आए, वे सब गलत आए, वह समझते हैं कि राज्य सरकारों के जितने आदमी आए सब गलत आए, सब गलत आदमी उन्होंने भेजे, वह समझते हैं कि जिन पांच लोगों का चयन हुआ वह भी गलत हुआ । उनकी दृष्टि में सब आदमी गलत हैं । मैं कोई झगड़ा नहीं करता हूं । मेरा जवाब यह है कि इन साहित्य नाटक अकादमी और संगीत नाटक अकादमी में जो लोग बैठे हैं उनके बारे में मैं बता देना चाहता हूं कि संगीत नाटक अकादमी में सिर्फ सरकार के द्वारा चुने हुए पांच हैं, मंत्रालय का एक प्रतिनिधि हैं, एक चेयर मैन हैं और यह सब मिल कर बीस ऐसे व्यक्ति चुनते हैं जिन्हों ने कला—कला का अर्थ है संगीत नाटक—के क्षेत्र में, ख्याति प्राप्त की है, विशेषज्ञ जो हैं । आठ में से दो करनाटक के, दो हिन्दुस्तानी के, दो नाट्य के और दो संगीत के विशेषज्ञ होते हैं । बारह और फिर वे चुनते हैं । ये बीस ऐसे हैं जिनके ऊपर सिवाय डाक्टर साहब के और कोई उंगली नहीं उठा सकता । डाक्टर साहब के अनुसार तो कोई और उनके सिवा विद्वान् है ही नहीं । मैं मानता हूं कि वह विद्वान् हैं । लेकिन हर चीज में वह अपनी विद्वता प्रकट करें तो मुश्किल होगा (इंटरप्शंस)

श्री रवी राय (पुरी) : आप...

श्री भागवत झा आजाद : आप बैठें । पूछ न ताछ मैं दुलहन की चाची (इंटरप्शंस) कला के क्षेत्र में, नाटक के क्षेत्र में इन अकादमियों ने बड़ा अच्छा काम किया है, इसमें कोई सन्देह नहीं है । मैं उदाहरण आपको देता हूं । संगीत नाटक अकादमी के। तत्वावधान में हमने "अंधायुग" का प्रदर्शन किया था । उसकी बहुत प्रशंसा हुई थी । करनाटक के एक नवोदित लेखक का जिनकी उम्र पच्चीस साल है अभी हमने उनका बादशाह तुगलक स्टेज पर लाया था । धर्मवीर भारती का भी "अंधा युग" स्टेज पर लाए हैं । डाक्टर साहब इनको देखते तो वाकई में समझ जाते कि काम हो रहा है या नहीं हो रहा है । हमारे देश के विद्वानों ने ही सर्टिफिकेट नहीं दिये हैं विदेशी विद्वानों ने भी दिये हैं । जो संगीत और ड्रामा डिवीजन के डायरेक्टर हैं अलका जी एक नवयुवक, उन को बाहर भेजा है । उन्होंने देश के लिए बड़ी ख्याति अर्जित की है और वह इस देश के लिए और हमारे लिए गौरव की बात है । लेकिन डाक्टर साहब को गौरव मालूम ही नहीं पड़ता है । मैं कहूंगा कि मैंने सिर्फ पांच नाम लिये हैं इन दो अकादमियों में जो बड़े ही विद्वान् हैं और सम्पूर्ण अपने क्षेत्र के मर्मज्ञ हैं, कलाकार हैं, जिन्होंने इन अकादमियों को गौरव दिया है और इनकी प्रतिष्ठा बनाई है । मैं समझता हूं कि तमाम जो इन्होंने समालोचना की है उसमें से सिवाय इसके कि भविष्य में प्रगति न हो कोई रचनात्मक सुझाव नहीं हैं ।

18.06 hrs.

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock on Monday, July 31, 1967/Sravana 9, 1889 (Saka).